स्वतन्त्र तबला वादन में 'गत' वैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(विविध घरानों के सन्दर्भ में)

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,

आगरा से संगीत में पी एच0 डी0 की उपाधि की पूर्ति हेतु

शोध–प्रबन्ध की

रूपरेखा

2018

निर्देशिका :

डॉ0 (श्रीमती) रश्मि श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर
संगीत विभाग, कला संकाय

शोधकर्त्री :

दामिनी वर्मा

विभागाध्यक्ष :

प्रो0 (श्रीमती) सुभद्रा कुमारी सतसंगी
संगीत विभाग, कला संकाय

संकाय प्रमुख :

प्रो0 जे0 के0 वर्मा
अंग्रेजी विभाग, कला संकाय

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट

(डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़, आगरा–282005

भूमिका

वर्तमान समय में तबला अवनद्ध वाद्य वादन के क्षेत्र में अग्रणी स्थान रखता है जो कि अपने आप में एक बहुत ही सशक्त, समर्थ व प्रभावपूर्ण वाद्य के रूप में स्वीकार किया जाता है। शास्त्रीय, उपशास्त्रीय के साथ–साथ लोकसंगीत की लगभग समस्त शैलियों के साथ इसका प्रयोग किया जाता है। वर्तमान में यह संगत का वाद्य तो है ही साथ ही विभिन्न कलाकारों की मौलिक सोच, दक्षता व कुशलता के आधार पर इसमें अनेकानेक वादन प्रकारों का निर्माण किया गया जिसके फलस्वरूप आज इसमें स्वतन्त्र रूप से भी सफल वादन किया जा रहा है। अतः आज तबला वाद्य हेतु जितना साहित्य विकसित हुआ है उतना अन्य किसी अवनद्ध वाद्य में नहीं दिखाई देता है।

तबला स्वतन्त्र वादन की परम्परा की विकास यात्रा विभिन्न घरानों के अथक प्रयासों के साथ फलती फूलती रही। विभिन्न घरानों में वादन हेतु एक दूसरे से पृथक विशेषताओं से युक्त भिन्न – भिन्न वादन प्रकारों, वादन तकनीक का विकास हुआ जैसे :– **दिल्ली घराने** में जहाँ दो अँगुलियों से युक्त **कोमल** व **सीमित ध्वनि युक्त निकास** का प्रयोग किया गया वहीं वादन तकनीक के अनुकूल विभिन्न **पेशकार, कायदे, टुकड़ों, मुखड़ों** आदि का विकास किया। **अजराड़ा घराने** की वादन शैली में अनामिका अँगुली के प्रयोग व **आड़ की लयकारियों** में निबद्ध बन्दिशों का विकास हुआ। **लखनऊ** यद्यपि दिल्ली घराने की ही शाखा है तथापि अपनी भिन्न वादन शैली के कारण ताल जगत में पृथक स्वरूप कायम कर लखनऊ घराने के नाम से स्थापित हुई तथा नृत्य की प्रधानता के कारण इसे **नचकरन बाज** के नाम से भी जाना जाता है। अतः वादन शैली में नृत्य की प्रधानता के फलस्वरूप **नाच परन, चारबाग की गत, गत तोड़े** इत्यादि का विकास हुआ। लखनऊ से ही विकसित एक शाखा **बनारस घराने** के नाम से विख्यात हुई जो अपने आप में भिन्न शैली से युक्त बाज के नाम से जानी जाती है जिसमें पखावज की प्रधानता के फलस्वरूप बोलों में ज़ोरदारी व गम्भीर बालों का प्राधान्य दिखाई देता है। पखावज और तबले के बोलों से युक्त इस वादन शैली में क्षेत्रीय विशेषताओं के आधार पर नवीन वादन प्रकारों **उठान, बाँट, चाला,**

परन, स्तुति परन, छन्द, लग्गी–लड़ी इत्यादि का समावेश हुआ। **लखनऊ** से ही विकसित एक अन्य वादन शैली फली–फूली जो **पश्चिमी** और **पूरब बाज** के मध्य की कड़ी के रूप में विकसित हुई जिसे **फर्रूखाबाद घराने** के नाम से जाना गया इस बाज में न केवल **ज़ोरदारी** है अपितु **कोमलता** का भी समावेश किया गया और साथ ही साथ प्रचलित वादन प्रकारों के साथ ही अन्य वादन प्रकारों जैसे :– **फर्शबन्दी, चलन, रौ** इत्यादि का विकास कर नवीन शैली का सूत्रपात किया। इन सभी वादन शैलियों से भिन्न **पंजाब घराना** अपने आप में एक अलग पहचान रखता है जिसमें ज़ोरदारी का प्राधान्य है क्योंकि यह पूर्ण रूप से पखावज वाद्य पर आधारित है व इसमें गणितीय सिद्धान्त से युक्त विभिन्न बन्दिशों का समावेश स्पष्ट दृष्टव्य है।

अतः इस प्रकार समस्त घरानों ने विभिन्न वादन शैलियों के साथ–साथ विभिन्न वादन प्रकारों का विकास किया। अस्तु वर्तमान समय में स्वतन्त्र तबला वादन हेतु विभिन्न वादन सामग्री का विकास हुआ जिनके आधार पर आज ताल जगत में इतने वादन प्रकार विकसित हैं कि प्रत्येक घराना अपने आप में एक भण्डार समाहित किये हुऐ है जैसे :– फर्शबन्दी, उठान, पेशकार, चलन, कायदा, रेला, गत–कायदा, गत, गत टुकड़े, छन्द, परन, चक्रदार, बाँट, लग्गी–लड़ी इत्यादि।

उक्त वर्णित समस्त घरानों में स्वतन्त्र वादन के क्षेत्र में बजाये जाने वाले विभिन्न वादन प्रकारों में कुछ वादन प्रकार कल्पनाशीलता पर आधारित हैं व उन्हें उसी अनुरूप वादन हेतु प्रयोग में लाया जाता है तो कुछ वादन प्रकार ऐसे भी हैं जिन्हें जिस प्रकार निर्मित किया गया है उसे हूबहू वैसा ही बजा दिया जाये। जैसे :– **गत, गत टुकड़े, परन, चक्रदार** इत्यादि।

समस्त घरानों में बजने वाले वादन प्रकारों में एक महत्वपूर्ण प्रकार है – **गत।** जो कि लगभग सभी घरानों में अपनी – अपनी विशेषतानुसार बजायी जाती है।

<u>पृष्ठभूमि :–</u>

जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है कि गत स्वतन्त्र वादन में बजाया जाने वाला एक विशिष्ट वादन प्रकार है जो कि लगभग समस्त घरानों में किसी ना किसी रूप में बजायी जाती है।

गत से तात्पर्य संशलिष्ट बोलों से युक्त उस छन्दबद्ध रचना से है जिसमें विभिन्न लयात्मक पक्षों के साथ–साथ खाली–भरी के अंगों का भी दिग्दर्शन होता है।

गत का शाब्दिक अर्थ गति, मोक्ष, विधि, दशा, हालत, ढ़ंग, गति चाल, ईश्वरीय लीला, वादन की क्रिया विशेष, वाद्य बजाने की कोई रीति इत्यादि से है।

गत फूलों से बना वह गुलदस्ता है, जो अपने आप में सम्पूर्ण होता है तथा जिसे अपने अनुसार घटाया या बढ़ाया नहीं जा सकता, क्योंकि गत के बोलों में एक विशेष गुथाँव, संयोजन, आपसी–सम्बन्ध, अनुपात होता है और शुरू से अन्त तक बोलों में एक क्रम रहता है, जो बदला नहीं जा सकता। बोल आपस में जोड़े बनाते हुए से प्रतीत होते हैं मानों सवाल जवाब चल रहा हो। गत का कायदे के समान विस्तार नहीं किया जा सकता। यदि उसे विस्तारपूर्वक बजाते हैं तो वह गत न होकर गत की विशेषता लिये हुए कायदा बन जाता है, जिसे विद्वजन **गत–कायदा** कहते हैं।

चूँकि गत प्रत्येक घराने में बजायी जाती है फलतः वर्तमान में गत के अनेकों प्रकार हमारे समक्ष दृष्टव्य हैं यथा :– **दुपल्ली, तिपल्ली, चौपल्ली, मंझेदार, जनानी–मर्दानी, फर्द गत, गेंद उछाल, लाहौरी, दर्जेदार, आकाल गत, जोड़हत्ती गत, अनाघात, लालकिला गत, नाटौरी, बढ़ई की गत, तिहाईदार, तिहाई रहित, ताली–खाली युक्त, झूलना गत, तीस हजारी, दरबारी, दहेजु, दुमुंही** इत्यादि। उक्त विभिन्न प्रकार की गतें अलग–अलग घरानों का वैशिष्ट्य हैं इनमें से कई गतें अपने–अपने घरानों को पृथक पहचान भी दिलाती है।

<u>समस्या का प्रादुर्भाव</u> :–

उपर्युक्त बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्री के मन–मस्तिष्क में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक ही था कि गतों में इतनी भिन्नता परिलक्षित होती है जो घरानों की विशेषताओं के आधार पर दिखाई देती है व एक घराने में बजायी जाने वाली गत दूसरे घराने से किस प्रकार पृथक है? गत की निजी विशेषताएँ क्या हैं ? गत अन्य वादन प्रकारों से किस प्रकार भिन्न है?

जो इसे **टुकड़े, परन, मुखड़े–मोहरे** से पृथक पहचान दिलाती है या फिर किस घराने में किस प्रकार की गत अधिक बजायी जाती है?

इन सब बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए इस वादन प्रकार के विषय में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की उत्कंठा जाग्रत हुई। अस्तु जानकारी की प्राप्ति हेतु अब तक हुए शोध कार्यों, पत्र–पत्रिकाओं के साथ ही विभिन्न पुस्तकों, वेब साइट आदि का अवलोकन किया। अवलोकन से प्राप्त सूचना निम्नवत है :–

क्र0सं0	लघु शोध प्रबन्ध	शोधार्थी
1.	फर्रूखाबाद घराने में प्रयुक्त गतें एवं उनकी विशेषताएँ	दिव्या श्रीवास्तव
2.	पंजाब घराने की परम्परागत गतें एवं उनकी विशेषताएँ	दामिनी वर्मा
3.	गत, परन, उठान एवं पल्टा वादन प्रकारों का विस्तृत अध्ययन	कु0 भारतीय चौहान
4.	फर्रूखाबाद व पंजाब घराने की परम्परागत गतों का तुलनात्मक अध्ययन	दामिनी वर्मा

क्र0सं0	पुस्तकें एवं पत्रिकायें	लेखक/सम्पादक
1.	ताल प्रसून	छोटे लाल मिश्र
2.	अप्रचलित कायदे एवं गतें	श्री सत्यनारायण वशिष्ठ
3.	पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें	डॉ0 आबान ई0 मिस्त्री
4.	तबले के विभिन्न घराने वादन शैलियाँ एवं बन्दिशें	डॉ0 सुदर्शन राम
5.	संगीत घराना अंक जनवरी – फरवरी 1982	डॉ0 लक्ष्मी नारायण गर्ग
6.	संगीत तबला अंक जनवरी – फरवरी 1993	डॉ0 लक्ष्मी नारायण गर्ग
7.	संगीत ताल अंक जनवरी – फरवरी 1940	डॉ0 लक्ष्मी नारायण गर्ग

उपर्युक्त वर्णित विवरणों व शोध छात्रा के संज्ञान में आये अब तक हुए शोध कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि शोध कार्यों में तबले के विभिन्न घरानों, उनका विकास, बोल–बन्दिशें, तुलनात्मक अध्ययन, गतों की विशेषताओं तथा कहीं पुस्तकों में कुछ गतों के लेखन

से सम्बन्धित तथ्य तो प्राप्त होते हैं किन्तु कहीं भी एक घराने में बजायी जाने वाली गत दूसरे घराने से किस प्रकार पृथक है? गत कि निजी विशेषताएँ क्या हैं ? गत अन्य वादन प्रकारों से किस प्रकार भिन्न है? इस सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी तो प्राप्त होती है परन्तु विस्तृत अध्ययन अभी अपेक्षित ही है साथ ही समस्त घरानों की गतों के विश्लेषणात्मक अध्ययन के सम्बन्ध में विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं मिलती है। अस्तु तबले के समस्त घरानों में प्रयुक्त गतें एवं उनकी विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा उपरोक्त विषय को शोध के लिए चुना गया है।

विषय कथन :–

स्वतन्त्र तबला वादन में 'गत' वैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन – (विविध घरानों के सन्दर्भ में)

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या :–

स्वतन्त्र वि0 (सं0) (भाव0 स्वतंत्रता)

लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – जो किसी के दबाव के बिना स्वयं सब कुछ कर सकता हो, स्वाधीन, आज़ाद।

भार्गव आदर्श हिन्दी कोश के अनुसार – स्वेच्छाकारी, मनमानी करने वाला, भिन्न, पृथक।

तबला (पुल्लिंग)

लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – (अ0 तबलः) ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा।

वादन(पुल्लिंग, संज्ञा)

लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – बाजा बजाना।

गत (स्त्रीलिंग)

राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – गति, मोक्ष, विधि, दशा, हालत, ढ़ंग, गति चाल, ईश्वरीय लीला, वादन की क्रिया विशेष, वाद्य बजाने की कोई रीति।

वैशिष्ट्य (पुल्लिंग, संज्ञा)

अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – विशेषता, विशेष, अंतर, श्रेष्ठता।

घराना (पुल्लिंग)

लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – (हि0 घर + आना (प्रत्य0)) खानदान, वंश कुल।

विश्लेषण (पुल्लिंग, संज्ञा)

अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – पृथक करना, किसी चीज के अंगों को या उसके अलग–अलग गुणों को स्पष्ट करना।

अध्ययन के उद्देश्य :–

- तबला वादन के क्षेत्र में घरानों का अध्ययन करना।
- तबले के समस्त घरानों की वादन शैली को जानना।
- स्वतन्त्र तबला वादन में बजाये जाने वाले विभिन्न वादन प्रकारों को जानना।
- तबला वादन में प्रयुक्त गत का अध्ययन करना।
- गत के वादन वैशिष्ट्य की जानकारी प्राप्त करना।
- विभिन्न घरानों में प्रयुक्त गतों के प्रकारों की जानकारी प्राप्त करना।
- विभिन्न घरानों में बजायी जाने वाली कतिपय गतों को लिपिबद्ध करना।

परिसीमांकन :–

प्रस्तुत शोध कार्य समय सीमा व उपलब्धता के आधार पर सभी घरानों से सम्बन्धित लगभग 50 गतों के अध्ययन तक सीमित रहेगा। जिससे की शोध कार्य गहनता से किया जा सके।

अध्ययन की विधि :–

- साक्षात्कार, सर्वेक्षणात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि।

अध्ययन के उपकरण :–

- दृश्य–श्रव्य सामग्री (कम्पयूटर, इंटरनेट, टेपरिकॉर्डर, लेपटॉप, मोबाइल।)

अध्ययन के स्त्रोत :–

पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकाओं एवं विभिन्न कलाकारों से विचार–विमर्श के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया जायेगाा।

अध्यायों का विभाजन :–

भूमिका

प्रथम अध्यायः–

तबला वादन के क्षेत्र में घराना – परिचयात्मक अध्ययन।

द्वितीय अध्यायः–

स्वतन्त्र तबला वादन में प्रयुक्त विभिन्न वादन प्रकारों का संक्षिप्त अध्ययन।

तृतीय अध्यायः–

तबले का विशिष्ट वादन प्रकार गत – अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार।

चतुर्थ अध्याय :–

विभिन्न घरानों में प्रयुक्त कतिपय परम्परागत गतों का लेखन।

पंचम अध्याय :–

विभिन्न घरानों में प्रयुक्त गत वैशिष्ट्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

उपसंहार

शोध का महत्व :–

तबले के समस्त घरानों से सम्बन्धित हुए शोधकार्यों, पुस्तक व पत्रिकाओं में घरानों का क्रमिक विकास, घरानों के संस्थापक, उनकी वंश परम्परा व उनसे विकसित अन्य परम्पराओं का विस्तार

व विभिन्न बन्दिशों का लेखन प्राप्त होता है यद्यपि पुस्तकों में कुछ गतें भी प्राप्त होती है किन्तु समस्त घरानों में प्रयुक्त गतें व उनकी विशेषताऐं प्राप्त नहीं होती। अतः शोधार्थिनी द्वारा किया जा रहा कार्य महत्वपूर्ण है क्योंकि इसके माध्यम से तबलें के समस्त घरानों में प्रयुक्त गतों व उनकी विशेषताओं की जानकारी प्राप्त हो सकेगी। साथ ही साथ समस्त घरानों की कतिपय परम्परागत गतों से संगीत विद्यार्थी परिचित भी हो सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

क्र0सं0	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष
1.	माईणकर सुधीर	तबला वादन कला और शास्त्र	अभिनव भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, 23/04/2000
2.	श्रीवास्तव गिरीशचन्द्र	ताल कोश	रूबी प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1996
3.	राम सुदर्शन	तबले के घराने वादन शैलियाँ एवं बन्दिशें	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण
4.	शर्मा भगवतशरण	ताल प्रकाश	संगीत कार्यालय, हाथरस, ग्यारहवाँ संस्करण, जनवरी 2002
5.	श्रीवास्तव हरिशचन्द्र	वाद्य शास्त्र	मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, प्रथम संस्करण, 1972
6.	परांजपे श्रीधर शरच्चन्द्र	संगीत बोध	मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, प्रथम संस्करण, 1972
7.	वशिष्ठ सत्यनारायण	तबले पर दिल्ली और पूरब	संगीत कार्यालय, हाथरस, तृतीय संस्करण, सितम्बर 1969

8.	मिस्त्री, डॉ आबान ई0	पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें	पं0 केकी0 एस0 जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई, द्वितीय संस्करण 2000
9.	वनिता वेणु	तबला ग्रन्थ मंजुषा	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स संस्करण 2002

पत्रिकायें

क्र0सं0	**सम्पादक का नाम**	**पत्रिका का नाम**	**प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष**
1.	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका,जनवरी 2015	संगीत कार्यालय, हाथरस
2.	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, अप्रैल 2013	संगीत कार्यालय, हाथरस
3.	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत पत्रिका, जनवरी–फरवरी 1999	संगीत कार्यालय, हाथरस
4.	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत घराना अंक जनवरी–फरवरी 1982	संगीत कार्यालय, हाथरस
5.	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत ताल तरंग अंक जनवरी–फरवरी 1990	संगीत कार्यालय, हाथरस
6.	गर्ग लक्ष्मी नारायण	संगीत ताल अंक जनवरी–फरवरी 1940	संगीत कार्यालय, हाथरस

कोश ग्रन्थ

क्र0सं0	**लेखक का नाम**	**कोश का नाम**	**प्रकाशक व प्रकाशन वर्ष**
1.	शर्मा, रामचन्द्र	लोकभारती प्रमाणिक हिन्दी कोश	लोकभारती प्रकाशन, तृतीय संस्करण, 1996
2.	सकरिया, बदरीप्रसाद एवं सकरिया, भूपतिराम	राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश	पंचशील प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 1977
3.	दीक्षित कृष्ण कान्त	अमर मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश	कमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2005
4.	पाठक, पं0 रामचन्द्र	भार्गव हिन्दी शब्दकोश	भार्गव बुकडिपो, चौक वाराणसी, षष्ठ संस्करण 1964